स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

हिमालयी भेड़िया (*कैनिस हिमालयेन्सिस*)

वैसे तो सामान्य रूप से भेड़ियों की आबादी में आ रही कमी चिंता का विषय है मगर हिमालयी भेड़िए की स्थिति तो बहुत नाज़ुक है। हिमालयी भेड़िए प्राचीन काल से ही भेड़ियों की एक अलग आबादी का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। इनकी संख्या अब मात्र 350 है। ये तथाकथित हिमालयी भेड़िए हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और उत्तरी भारत के 70000 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैले हुए हैं।

बाहरी रूप-रंग, सामाजिक और प्रजनन व्यवहार में हिमालयी भेड़िए तिब्बती भेड़िए (कैनिस लुपस) जैसे ही दिखते हैं मगर कई जीव वैज्ञानिक इन्हें एक अलग प्रजाति मानने का आग्रह कर रहे हैं। हिमालयी भेड़िया (कैनिस हिमालयेन्सिस) भारतीय जीव वैज्ञानिकों द्वारा सुझाया गया नाम है। उनका मत है कि इस तरह से इसे कैनिस लुपस से अलग देखा जा सकेगा। वैसे अधिकारिक रूप से मैमल स्पीशीज़ ऑफ दी वर्ल्ड के संपादकों का मत है कि हिमालयी भेड़िए तिब्बती भेड़िए की ही एक आबादी है और तिब्बती भेड़िया आम धूसर भेड़िए की उप-प्रजाति है।

अभी तक ऐसा माना जाता था कि सभी भेड़िए और कुत्ते एक ही पूर्वज से आए हैं। इसका मतलब है कि सारे पालतू कुत्ते भेड़ियों के वंशज हैं। लेकिन हिमालय के भेड़ियों के अध्ययन के बाद यह साफ हो गया है कि इन हिमालयी भेड़ियों ने कुत्तों के पालतूकरण में कोई योगदान नहीं दिया है।

भारतीय उपमहाद्वीप भारतीय भेड़ियों के अलावा धूसर भेड़िए का भी घर रहा है। यह दुनिया की एक मात्र ऐसी जगह है जहां भेडिये के तीनों वंश मौजूद हैं। इससे लगता है कि वर्तमान भेड़ियों का विकास संभवतः भारत में ही हुआ होगा।

माइटोकांड्रिया डीएनए विश्लेषण से भी पता चला है कि हिमालयी भेड़िया तिब्बती भेड़ियों से अलग है। ये भेड़ियों की अब तक दर्ज किए गए सबसे प्राचीन वंश का प्रतिनिधित्व करते हैं।

प्रकाशक, मुद्रक सी.एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462 011 से मुद्रित। सम्पादकः डॉ. सुशील जोशी